इकाई 1 राजनीति को समझना

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 राजनीति एक व्यवहारिक गतिविधि के रूप में

- 1.2.1 राजनीति : नपा तुला वर्णन कठिन
- 1.2.2 राजनीति की प्रकृति
- 1.2.3 राजनीति : मानव स्थिति का अनिवार्य लक्षण

1.3 राजनीति क्या है?

1.4 राज्य क्या है?

- 1.4.1 राज्य : राजनीतिक संस्थाओं / सामाजिक संदर्भ के आधार पर विभिन्नता
- 1.4.2 रैल्फ मिलिबैंड के राज्य संबंधी विचार

1.5 राजनीति एक पेशे के रूप में

1.6 शक्ति का वैधानिक प्रयोग

- 1.6.1 वैधता संबंधी मैक्स वैबर के विचार
- 1.6.2 वैधता : राजनीति विज्ञान का केन्द्रीय विषय
- 1.6.3 'अवैधता' की प्रक्रिया
- 1.6.4 दक्षतापूर्ण सहमति
- 1.6.5 राज्य मशीनरी के कर्मचारी : अभिजात्य वर्ग

1.7 सारांश

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

स्नातक स्तर के राजनीति सिद्धांत के नवीन पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रथम खंण्ड के इस परिचयात्मक इकाई में हम आपको राजनीति के बुनियादी अर्थ के बारे में बतायेंगे और इस प्रकार आप राजनीति विज्ञान की विषय वस्तु की मौलिकता के बारे में जान पायेंगे। इस इकाई के पढ़ने के बाद आप :

- राजनीति क्या है, इसकी व्याख्या कर पायेंगे;
- राज्य के अर्थ को समझ पायेंगे;
- शक्ति की अवधारणा का वर्णन और व्याख्या कर सकेंगे; और
- वैधता और अवैधता को जान सकेंगे।

1.1 परिचय

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य 'राजनीतिक' की अवधारणा को समझना है। राजनीति का सार एक ऐसी व्यवस्था लाने की खोज है, जिसे व्यक्ति अच्छा मानता है। 'राजनीति' शब्द ग्रीक शब्द एक ऐसी पोलिस (Polis) से बना है, जिसका अर्थ नगर और राज्य दोनों है।

प्राचीन यूनान के अंतर्गत राजनीति नये ढंग से सोचना, अनुभव करना था और इन सब से परे, व्यक्ति के साथ सम्बंध स्थापित करना था। नागरिक के रूप में वे सभी समान थे, यद्यपि नागरिक अपने धन, बुद्धि इत्यादि के संबंध में अलग-अलग थे। यह राजनीतिक की अवधारणा है, जो नागरिकों को विवेकशील बनाती है। राजनीति गतिविधि है, विशेषकर इस नयी वस्तु के लिए जिसे नागरिक कहा जाता है। राजनीति का विज्ञान संभव है, क्योंकि राजनीति अपने आप एक नियमित प्रणाली का अनुसरण करती है, यद्यपि यह मानव प्रकृति की दया पर निर्भर है, जिससे यह उत्पन्न होती है।

यूनानी राजनीति विज्ञान ने संविधानों का अध्ययन किया और मानव स्वभाव और राजनीतिक संघों के संबंधों का सामान्यीकरण किया। शायद इसका सबसे शक्तिशाली तत्व *'पुनरावृत्ति चक्र का सिद्धांत'* था। राजतंत्र निरंकुशतंत्र में बदल जाता है, निरंकुशतंत्र को कुलीनतंत्र के द्वारा उखाड़ फेंका जाता है, जो अल्पतंत्र में जनसंख्या को शोषण करने के लिए परिणत होता है, जिसे प्रजातंत्र के द्वारा हटा दिया जाता है, जो असहनीय अस्थिर भीड़ के शासन में परिवर्त्तित होता है; जहाँ कुछ शक्तिशाली नेता आपने आप को राजा की तरह स्थापित करते हैं और चक्र पुनः शुरू होता है। अरस्तु का विचार है कि प्रजातंत्र का कुछ अंश संतुलित संविधान के सबसे अच्छे प्रकार के लिए आवश्यक होता है, जिसे वे राजनीति (Polity) के नाम से पुकारते हैं। उन्होने अनेक संविधानों का अध्ययन किया और वह विशेषकर राजनीतिक परिवर्त्तन की मशीनरी में अभिरुचि रखते थे। वे सोचते थे कि क्रांति सदैव समानता के लिए कुछ माँगो से उत्पन्न होती है।

प्राचीन रोम राजनीति का सर्वोत्तम उदाहरण है जहां राजनीति पद पर आसीन व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली एक ऐसी गतिविधि थी जो शक्ति प्रयोग को स्पष्ट सीमित करती है। जब रोम वासियों ने शक्ति के बारे में सोचा, उन्होंने एक प्रमुख विभिन्नता को स्वीकार करने के क्रम में दो शब्दों का प्रयोग किया।

1.2 राजनीति एक व्यवहारिक गतिविधि के रूप में

राजनीति की एक व्यवहारिक गतिविधि मानव संभावनाओं के संगठन पर संघर्ष है। ऐसे में यह शक्ति से संबंधित है; यह कहा जाता है कि यह सामाजिक एजेंटों, ऐजेन्सियों और संस्थाओं के पर्यावरण, सामाजिक और शारीरिक, को व्यवस्थित या रूपांतरण करने के सामर्थ्य के बारे में होती है। यह उन संसाधनों से संबंधित है, जो इसकी क्षमता को प्रभावित करते हैं और उन शक्तियों के बारे में है जो इसके प्रयोग को आकार देते हैं। इसके अनुसार, राजनीति एक आवरण होता है जिसे निजी और सार्वजनिक जीवन में बाँटते हुए यह सभी समूहों, संस्थाओं और समाजों में पाया जाता है। इसकी उन सभी संबंधों, संस्थाओं और ढांचों में अभिव्यक्ति होती है, जो समाजों के जीवन के उत्पादन और पुनः उत्पादन से संबंधित होते हैं। राजनीति हमारे जीवन के सभी पहलूओं की रचना और उनके लिए शर्त निर्धारित करती है और यह सामूहिक समस्याओं के विकास, और उनके निराकरण के तरीकों का केन्द्र है।

1.2.1 राजनीति : नपा तुला वर्णन कठिन

राजनीति की संक्षिप्त परिभाषा – उन चीज़ों के अनुकूल जिन्हें हम अनायास राजनीतिक कहकर पुकारते हैं – संभव नहीं है। राजनीति विभिन्न प्रयोगों और अर्थच्छायाओं का एक पद हैं। शायद, हम इस छोटे कथन के सबसे नजदीक पहुँच सकते हैं, जो इस प्रकार हैः राजनीति वह गतिविधि है, जिसके द्वारा समूह उनके सदस्यों के बीच भिन्नता में सामंजस्य बैठाने के प्रयास के माध्यम से अनिवार्य सामूहिक निर्णयों तक पहुँचते हैं। इस परिभाषा में प्रमुख बिन्दु हैं।

1.2.2 राजनीति की प्रकृति

राजनीति एक सामूहिक गतिविधि है, यह उन लोगों को शामिल करती है, जो सामान्य सदस्यता या कम से कम एक समान भाग्य का सहयोगी होना स्वीकार करते हैं। इस प्रकार रॉबिनसन क्रूसो राजनीति का अभ्यास नहीं कर सकते थे।

राजनीति विचारों की प्रारंभिक विविधता को स्वीकार करती है, यदि यह लक्ष्य से सम्बंधित नहीं होती है तब कम से कम साधनों से। यदि हम सभी पूरे समय सहमत हो तो, राजनीति फिजूल होगी।

राजनीति वाद-विवाद और अनुनय के माध्यम से ऐसे मतभेदों में सामंजस्य स्थापित करती है। अतः संचार राजनीति का केन्द्र बिन्दु होता है। राजनीतिक निर्णय समूह के लिए प्राधिकृत नीति हो जाते हैं, जिन्हें यदि आवश्यक हो तो बल प्रयोग द्वारा लागू किया जाता है। राजनीति का मुश्किल से वर्चस्व हो, यदि निर्णय हिंसा के द्वारा लिये जाये लेकिन बल या इसकी धमकी सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया सुनिश्चित करती है।

राजनीति की आवश्यकता मानव जीवन के सामूहिक आचरण से उत्पन्न होती है। हम समूह में रहते हैं जिसे संसाधनों की भागीदारी, अन्य समूहों से संबंध और भविष्य की योजना के बारें में सामूहिक निर्णय लेने होते हैं। परिवार की बहस कि छुट्टी कहाँ बितायें, देश को युद्ध के लिए निर्णय लेना है, विश्व को प्रदूषण से हुई क्षति को सीमित करना है – सभी उदाहरण समूह निर्णय के हैं, जो उसके सभी सदस्यों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक प्राणी होने के नाते राजनीति हमारे भाग्य का एक भाग है, हमारे पास इसका अभ्यास करने के सिवा कोई विकल्प नही हैं।

1.2.3 राजनीति : मानव स्थिति का अनिवार्य लक्षण

यद्यपि 'राजनीति' शब्द का अक्सर एक निराशावादी (Cynical) रूप में प्रयोग होता है, सार्वजनिक अभिरुचि के अंतर्गत निजी लाभ के कारण, राजनीति वास्तव में मानवीय स्थिति की विशेषता है। यूनानी दाशर्निक अरस्तु ने तर्क दिया था कि 'मनुष्य स्वभावतः राजनीतिक प्राणी है'। इसके अनुसार उनका अर्थ मात्र यह नहीं था कि राजनीति अपरिहार्य है, बल्कि यह एक अनिवार्य मानवीय गतिविधि है, राजनीतिक कार्यकलाप की वह विशेषता है, जो हमें दूसरी उपजातियों से पूरी तरह अलग करते है। अरस्तु के अनुसार लोग सिर्फ राजनीतिक समुदाय में भागीदारी के माध्यम से ही अपनी सच्ची तर्कशीलता और सद्‌गुणी स्वभाव को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

समूह के सदस्य बिरले ही सहमत होते हैं, कम से कम प्रारम्भ में, क्या कार्य करना है पर। यदि लक्ष्यों पर समझौता भी होता है, तो साधनों पर फिर भी झगड़ा हो सकता है। फिर भी निर्णय होना चाहिए, एक तरीके से या दूसरे से और एक बार निर्णय होने पर यह समूह के सारे सदस्यों को प्रतिबद्ध करेगा। इस प्रकार राजनीति उन विधियों को समाहित करती है, जो विचारों को अभिव्यक्त किये जाने की अनुमति देती हैं और तब पूरे निर्णय को संयुक्त किया जाता है। जैसा कि शिवली बताते हैं, ''राजनीतिक कार्य को सामान्य समस्या का सबसे सामान्य समाधान को बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से ढूंढ निकालना या कम से कम तर्क पूर्ण सामान्य समाधान के तरीके के रूप में समझा जा सकता है''। दूसरे शब्दों में, राजनीति सार्वजनिक विकल्पों को समाहित करती है।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) व्यवहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति क्या है?

.....

.....

.....

.....

2) राजनीति की आवश्यक प्रकृति की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

1.3 राजनीति क्या है?

प्रत्येक व्यक्ति के पास राजनीति शब्द के अर्थ के बारे में कुछ विचार होता है; कुछ लोगों के लिए यह प्रश्न बिल्कुल फिजूल है। 'राजनीति' वह है, जो व्यक्ति समाचार पत्रों में पढ़ता है या टेलीविज़न पर देखता है। यह राजनीतिज्ञों, विशेष रूप से राजनीतिक दलों के नेताओं की गतिविधियों से संबंधित है। राजनीति क्या है? राजनीति की प्रकृति को क्या निर्धारित करता है? यदि कोई राजनीतिज्ञों की गतिविधियों की अभिव्यक्ति की परिभाषा से शुरू करता है, तो कोई कह सकता है कि राजनीति का संबंध शक्ति के लिए उनके संघर्ष में राजनीतिक वैमनस्यता से है। यह निश्चित परिभाषा होगी, जिससे सर्वाधिक लोग सहमत होंगे। संभव्यता, इस पर भी सहमति होगी कि राजनीति अंतराष्ट्रीय स्तर पर राज्यों के बीच के संबंध को सूचित करती है।

'राजनीति शक्ति और इसे कैसे वितरित किया जाता है से संबंधित हैं । लेकिन शक्ति शून्य में तैरती हुई कोई मूर्त्त सत्ता नहीं है। यह मानव में समाहित होती है। शक्ति एक प्रकार का संबंध होता है, जहां एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की आज्ञा को मानता है, चाहे वह मानना चाहती हो या नहीं। इस प्रकार की जो परिस्थिति उत्पन्न होती है, उसे नेतृत्व, आधिपत्य और अधीन की कोटि में, वर्गीकृत किया जाता है। मैक्स वैबर ने 1918 का अपना प्रसिद्ध भाषण, 'राजनीति एक पेशे के रूप में' यह प्रस्ताव करते हुए प्रारंभ किया कि राजनीति पूरी तरह से विस्तृत होती है और किसी भी प्रकार की स्वतंत्र नेतृत्व वाली गधिविधि को समाहित करती है। संदर्भ चाहे जो हो, ऐसी 'नेतृत्व' जहां भी निहित होता है, वहाँ राजनीति होती है। हमारे शब्दों, में राजनीति उस किसी भी परिस्थिति को शामिल करेगी, जहाँ शक्ति संबंधों का अस्तित्व होता है, उदाहरणार्थ, जहाँ लोग बधित या दबे हुए हो, अथवा किसी प्रकार के प्राधिकार के अधीन हों। यह उन परिस्थितियों को भी समाहित करेगी जहां व्यक्ति संरचनाओं या संस्थाओं के एक सैट द्वारा दबाये जायें।

ऐसी विस्तृत परिभाषा का यह गुण है कि यह दर्शाया जा सकता है कि राजनीति आवश्यक रूप से सरकार की बात नहीं है, ना ही पूरी तरह से राजनीतिज्ञों की गतिविधियों से संबंधित है। राजनीति उन सभी संदर्भों में स्थित होती है, जहाँ सत्ता संरचना और नेतृत्व प्राप्त करने या इसे बनाये रखने के लिए सत्ता संघर्ष हो। इस अर्थ में कोई श्रमिक संघों या 'विश्वविद्यालय की राजनीति' के बारे में बातें कर सकता है। कोई 'यौन राजनीति', पुरूषों का महिलाओं के ऊपर आधिपत्य या इस संबंध को परिवर्त्तन करने के अर्थ में चर्चा कर सकता है। वर्तमान समय में शक्ति के संदर्भ में नस्लीय राजनीति के बारे में अधिक

विवाद है। संकुचित अर्थ में प्रत्येक कार्य राजनीति होता है, जो हमारे जीवन को प्रभावित करती है, उन संस्थाओं के माध्यम से जो राजसत्ता का प्रयोग तथा नियंत्रण करते हैं तथा जिन उद्देश्यों के लिए वे नियंत्रण का प्रयोग करती हैं। उपर्युक्त उधृत भाषण में वैबर ने सामान्य नेतृत्व के संबंध में राजनीति की बहुत विस्तृत परिभाषा प्रारम्भिक रूप से देने के बाद, बहुत सीमित परिभाषा दी : उन्होंने लिखा कि 'हम राजनीति से समझना चाहते हैं, एक राजनीतिक संघ का नेतृत्व या इसको प्रभावित करना, इसलिए आज एक राज्य का'। इस परिप्रेक्ष्य में, राज्य केन्द्रीय राजनीतिक संघ है। एक राजनीतिक प्रश्न वह है, जो राज्य से संबंधित है, किस उद्देश्य के लिए शक्ति का इस्तेमाल किया जाता है और इसका परिणाम क्या होता है और इसी प्रकार के अन्य।

1.4 राज्य क्या है?

यहाँ एक नया मुद्दा उभर कर आता है कि राज्य क्या है? इस प्रश्न का किसी प्रकार से उत्तर देना आसान नहीं है, नहीं इस पर कोई सहमति है कि उत्तर क्या होना चाहिए। यह सर्वप्रथम अवश्य सूचित किया जाना चाहिए कि राज्य के विभिन्न रूप होते हैं, जो प्रमुख तौर पर एक दूसरे से भिन्न होते हैं। ग्रीक नगर-राज्य आधुनिक राष्ट्र-राज्य से साफ तौर पर अलग है, जिसका फ्रांसिसी क्रांति के वक्त से विश्व राजनीति पर आधिपत्य रहा है। समकालीन उदारवादी, प्रजातांत्रिक राज्य, जिसका अस्तित्व ब्रिटेन और पश्चिमी यूरोप में है, यह हिटलर या मुसोलनी के फासीवादी राज्य से अलग है। यह राज्य के उस रूप से भी भिन्न है, जिसका अस्तित्व भूतपूर्व यू.एस.एस.आर. और पूर्वी यूरोप में था। राजनीति के अध्ययन का प्रमुख भाग और निश्चित रूप से इस पुस्तक का अभिन्न अंग, इन पदों का क्या अर्थ है, उनकी व्याख्या है। इसका उद्देश्य एक रूप दूसरे से भिन्न कैसे है, इस को दिखाना है और यह भी कि ऐसे अंतर का क्या महत्त्व है।

1.4.1 राज्य : राजनीतिक संस्थाओं/सामाजिक संदर्भ के आधार पर विभिन्नता

राज्य अपनी राजनीतिक संस्थाओं की तरह सामाजिक संदर्भ, जिसके अंतर्गत वे अवस्थित हैं और जिन्हें वे सुव्यवस्थित करने की कोशिश करते हैं, में भिन्न हैं। इसलिए, जबकि उदारवादी प्रजातांत्रिक राज्य प्रतिनिधि संस्थाओं जैसे संसद और स्वतन्त्र न्यायपालिका के द्वारा निर्धारित किया जाता है, नेता फासीवादी राज्य को नियंत्रित करता है। सामाजिक संदर्भ के संबंध में महत्त्वपूर्ण भेद पश्चिमी और सोवियत प्रणालियों के बीच है, पहला ऐसे समाज में समाहित है, जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के आधार पर संगठित है, जबकि दूसरे मामले में समाज के उत्पादन संसाधनों पर स्वामित्व और नियंत्रण राज्य द्वारा किया जाता है। अतः प्रत्येक मामले में, राज्य, विभिन्न रूप से संगठित, बहुत भिन्न प्रकार के सामाजिक ढांचे में कार्य करता है, और यह राज्य की प्रकृति और उद्देश्यों को बहुत हद तक प्रभावित करता है और जिनको कि यह पूरा करता है।

राज्य के विभिन्न रूप होते हैं, लेकिन जो भी रूप किसी व्यक्ति के दिमाग में रहे, राज्य एक अखंड़ित इकाई नहीं है। जैसे कि राज्य सरकार' नहीं है। यह विभिन्न तत्त्वों का संयुक्त रूप है, जिसका कि सरकार केवल एक तत्व है। पश्चिमी उदारवादी, प्रजातांत्रिक राज्य, में जो सरकार बनाते हैं वे वास्तव में राज्य शक्ति के साथ हैं। वे राज्य के नाम पर बोलते हैं और राज्य शक्ति के लीवर को नियंत्रण करने के क्रम में पद ग्रहण करते हैं।

फिर भी भाषा का परिवर्त्तन करने के लिए, राज्य के घर में अनेक निवास स्थान हैं और सरकार उनमें से एक को ग्रहण करती है।

1.4.2 रैल्फ मिलिबैंड के राज्य संबंधी विचार

अपनी पुस्तक 'पूंजीवादी समाज में राज्य' (The State in Capitalist Society) में रैल्फ मिलिबैंड उन विभिन्न तत्त्वों का पंजीयन करते हैं, जो एक साथ मिलकर राज्य का निर्माण करते हैं। पहला, परंतु किसी भी शर्त पर राज्य उपकरण का एकमात्र तत्त्व सरकार होती है। दूसरा प्रशासनिक तत्त्व, सिविल सेवा या नौकरशाही होता है। यह प्रशासनिक कार्यपालिका, उदारवादी - प्रजातांत्रिक प्रणालियों में, निष्पक्ष मानी जाती है तथा जो सत्ता में होते हैं, उन राजनीतिज्ञों के आदेश का पालन करती है। वास्तव में, फिर भी नौकरशाही, का अपना प्राधिकार हो सकता है और वह इसका प्रयोग कर सकती है। तृतीय, मिलिबैंड की सूची में है मिलिटरी और पुलिस आदेश-परिपालन या राज्य का दमनकारी अंग; चतुर्थ, न्यायपालिका आती है। किसी भी संवैधानिक व्यवस्था में, न्यायपालिका सरकारी शक्ति रखने वालों से स्वतंत्र मानी जाती है। यह उन पर नियंत्रण का कार्य करती है। पाँचवां उप-केन्द्र या स्थानीय स्वशासन इकाइयाँ आते हैं। कुछ संघात्मक प्रणालियों में, ये इकाइयाँ केन्द्रीय सरकार से काफी सीमा तक स्वतंत्रत हैं, शक्ति के अपने क्षेत्र का नियंत्रण करती हुयी, जहाँ सरकार संवैधानिक रूप से हस्तक्षेप से अलग रखी जाती है। केन्द्रीय और स्थानीय सरकार के बीच का संबंध एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा बन गया है। जैसा कि हाल में ब्रिटिश राजनीति में ग्रेटर लंदन कॉन्सिल और महानगर काउन्टियों को हटाने, स्थानीय सरकार को वित्त प्रदान संबंधी वाद-विवाद, कीमत निर्धारण और अन्य के ऊपर विवाद देखने को मिले हैं। छटा और अंततः, ब्रिटिश प्रणाली में प्रतिनिधि सभायें और संसद को सूची को शामिल किया जा सकता है। कोई राजनीतिक दलों की भी चर्चा कर सकता है, यद्यपि वे कम से कम उदारवादी प्रजातंत्र में, सामान्यतयाः राज्य मशीनरी के भाग नहीं होते हैं। वे प्रतिनिधि सभा में अपनी प्रत्यक्ष भूमिका निभाते हैं और वहाँ कम से कम, अंशतः सरकार और विरोधी पक्ष के बीच प्रतिस्पर्धात्मक मुकाबले को संवादित किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) आप राजनीति शब्द से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) रैल्फ मिलिबैंड के राज्य संबंधी विचारों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 राजनीति एक पेशे के रूप में

यह बिन्दु हमें वैबर और उनके पहले से ही उद्धृत भाषण, 'राजनीति एक पेशे के रूप में' की ओर ले जाता है। यह वाद-विवाद करने के बाद कि राजनीति केन्द्रीय राजनीतिक संघ, राज्य से सम्बंधित है वैबर ने आगे कहा कि राज्य को, उसके कार्यों या उद्देश्यों के संदर्भ में नहीं परिभाषित किया जा सकता है। कोई कार्य ऐसा नहीं था, जो विशेष रूप से राज्य की व्याख्या करे, अंततः राज्य को निश्चित साधनों के संदर्भ में परिभाषित करने की आवश्यकता थी और ये साधन, आखिरकार, शारीरिक शक्ति थे। वैबर ने लिखा कि 'राज्य एक मानवीय समुदाय होता है, जो दिए गए क्षेत्र में शारीरिक बल के वैध प्रयोग के एकाधिकार का सफलतापूर्वक दावा करता है'।

यहाँ तीन खास तत्त्वों को मिलाया गया हैः एक दिए गया प्रदेश या भौगोलिक क्षेत्र, जिसको कि राज्य नियंत्रित करता है; अपने नियंत्रण को संचालित करने के लिए शारीरिक बल का प्रयोग और तीसरा सबसे महत्त्वपूर्ण, ऐसे बल के वैध प्रयोग का एकाधिकार है। इस वैधता को अधिकतर लोगों के द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए। यदि सभी के द्वारा नहीं। वैबर ने निष्कर्ष निकाला कि उनके अनुसार राजनीति का अर्थ 'सत्ता में भागीदारी के लिए प्रयास करना या राज्यों के अन्तर्गत सत्ता के विभाजन या राज्य के अंतर्गत समूहों के बीच राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास करना' है।

इसका भी उल्लेख था कि प्रत्येक राज्य का एक विशेष सामाजिक संदर्भ के अंतर्गत अस्तित्व होता है। राजनीति का अध्ययन प्रमुख रूप से राज्य और समाज के संबंध पर आधारित होता है। राजनीति के राज्य-केन्द्रित परिप्रेक्ष्य का यह अर्थ यह नहीं है कि इसका अध्ययन जो समाज के विस्तृत क्षेत्र में घटित होता है उसको नज़रअन्दाज़ करे और, जैसा कि वैबर ने कहा कि यह कैसे 'सत्ता के वितरण को प्रभावित करता है'।

एक और तथ्य की अवहेलना नहीं की जा सकती हैः यह राज्य सत्ता का लगातार विकास और केन्द्रीयकरण है। यदि कोई व्यक्ति राज्य के आधिपत्य को एक विशेषीकृत उपकरण के रूप में देखता है, तब आधुनिक काल का इतिहास अपने पैमाने और पकड़ के विस्तार के द्वारा सूचित किया जाता है। आधुनिक राज्य को कार्यों के उन्नतशील वैविध्य के लिए एक प्रगतिशील संयुक्त नौकरशाही की ज़रूरत है। इसे कड़े और अधिक मिश्रित, सशस्त्र सैनिक बलों, अधिक व्यवस्थित कल्याणकारी एजेन्सियों की ज़रूरत होती है और पहले की तुलना में, गतिविधियों की अधिक विस्तृत श्रेणी को अपनाता है। कार्य के राज्य क्षेत्र का यह विस्तार, इसका वृद्धि और विकास, उदारवादी-प्रजातांत्रिक प्रणालियों के अपने पूंजीवादी सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में और समाजवादी प्रणालियों के अपने सामूहिक आर्थिक ढाँचे, दोनों पर लागू होता है। वैबर ने ऐसे विकास को एक प्रशिक्षित, दक्ष और विवेकशील प्रभावकारी नौकरशाही के उद्भाव के रूप में देखा। बिल्कुल विभिन्न राजनीतिक और सैद्वांतिक पृष्ठभूमि वाले मार्क्स इस बिन्दु पर उनसे सहमत थे। मार्क्स ने फ्रांस में राज्य सत्ता के विकास को 'लुई बोनापार्ट के 18वीं बुमेयर' के अंतर्गत लिखा, जिसे उन्होंने आधुनिक राज्य के विशिष्ट रूप में स्वीकार किया। उन्होंने वर्णन किया कि कैसे समाजवाद अंततः राज्य को नष्ट कर देगा और समाज दमन के विशेषीकृत उपकरण के बिना अपने आप शासित होगा। वैबर का ठीक इसके विपरीत मानना था कि समाजवाद को सामूहिक अर्थव्यवस्था और समाज को संचालित करने के लिए और अधिक कर्मचारियों की ज़रूरत होगी।

1.6 शक्ति का वैधानिक प्रयोग

बात यह है कि राज्य शक्ति पर निर्भर करता है, परंतु यह सिर्फ शक्ति पर ही आधारित नहीं होता है। यहाँ, शक्ति के वैधानिक प्रयोग के सिद्धांत का आगमन होता है। सामान्यतः शक्ति और इस प्रकार राज्य की शक्ति, का प्रयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। ज़बरदस्ती शक्ति का एक रूप होती है और शायद जिसे आसानी से समझा जा सकता, लेकिन मात्र यही नहीं है। सभी शक्ति संबंधों को एक आसान ढाँचे के आधार पर नहीं समझा जा सकता है। यदि एक व्याख्याता बहस और ज्ञान शक्ति के द्वारा विद्यार्थियों को अपने विचारों के निर्माण में सहायता प्रदान करता है, तो वह शक्ति के एक प्रकार का प्रयोग करता है, लेकिन यह विद्यार्थियों के इच्छा के विरुद्ध नहीं होती है। ज़्यादा मायने की बात यह है कि शक्ति के सभी प्रयोग कर्त्ता अपने शासितों को अपने शक्ति प्रयोग को सही और उचित बतातें हैं।

लोगों को सम्मत करने का औचित्यीकरण का यह प्रयास विधि सम्मत की प्रक्रिया कहलाता है। हम इस उचित या स्वीकृत शक्ति को प्राधिकार (Authority) कह सकते हैं। ऐसा हम केवल प्रतिबंधों के भय के कारण पालन की जाने वाली शक्ति से पृथक दर्शाने के लिए कह सकते हैं। लोग इस वैधानिक सत्ता या शक्ति का पालन इसलिए करते हैं क्योकि वे ऐसा करने को सही समझते हैं। वे विश्वास करते हैं, चाहे किसी भी कारण से कि सत्ताधारी प्रभुत्वपूर्ण भूमिका के अधिकारी बन जाते हैं। उनके पास वैधानिक सत्ता होती है, आदेश देने का अधिकार होता है। सत्ता के एक नवीन विश्लेषक के शब्दों में, 'वैधानिक सत्ता एक शक्ति संबंध है, जिसमें सत्ताधारी को आदेश देने का अभिस्वीकृत अधिकार होता है और सत्ता का पालन किया जाना एक अभिस्वीकृत कर्त्तव्य होता है''।

1.6.1 वैधता संबंधी मैक्स वैबर के विचार

वैबर के अनुसार विधि-सम्मत तीन प्रकार के होते हैं, अर्थात्, तीन तरीकों से शक्ति के प्रयोग को उचित ठहराया जा सकता है। पहले का संबंध पारंपरिक वर्चस्व से है। इसमें शक्ति को इसलिए उचित ठहराया जाता है क्योंकि शक्तिधारी परंपरा या आदत को प्रभावित करते हैं। सत्ता सदैव उनमें या उनके परिवार में निहित रही है। दूसरा प्रकार, करिश्माई विधि सम्मत है। लोग शक्तिधारी का आदेश मानते हैं, क्योंकि वह नेता विलक्षण योग्यता का प्रदर्शन करता है। अंतिम, तीसरा प्रकार विधिक-तार्किक है। लोग कुछ विशेष व्यक्तियों का आदेश मानते हैं, जिन्हें स्पष्ट रूप से परिभाषित कार्यक्षेत्र में विशेष नियमों के तहत आदेश देने को प्राधिकृत किया गया है। कोई व्यक्ति कह सकता है कि प्रथम दो प्रकार वैयक्तिक प्रकृति के हैं। जबकि, विधिक-तार्किक प्रकार प्रक्रियात्मक है। इस तरह, यह राजनीतिक सत्ता की आधुनिक संकल्पना के संगत है। यह आधुनिक संकल्पना के संगत हैं। जैसा कि वैबर कहते हैं, यह आधुनिक 'राज्य के सेवक' द्वारा प्रयुक्त वर्चस्व है और उन सत्तधारियों के द्वारा भी, जो इस बात में उनके समान हैं'।

यह बात स्पष्ट है कि किसी भी प्रणाली में शक्ति प्रयोगकर्त्ता चाहते हैं कि उनकी शक्ति की वैधता को स्वीकार नहीं करने वालों पर बल प्रयोग किया जा सकता है। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में, ऐसे लोग हो सकते हैं जो नियमों का पालन केवल इसलिए करते हैं, क्योंकि नियमों का पालन न करने पर दंण्ड दिया जायेगा। स्पष्ट है कि इससे राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता उस मात्रा में बढ़ जाती है, जिस मात्रा में लोग ऐच्छिक रूप से नियमों या कानूनों का पालन करते हैं, क्योकि वे संस्थापित व्यवस्था की वैधता को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार प्रदत्त जारी इस प्रकार वे उन लोगों की सत्ता को स्वीकार

करते हैं, जिन्हें नियमों के द्वारा आदेश जारी करने की शक्ति प्रदान की गई हैं। वास्तव में, सभी राजनीतिक व्यवस्थाएं सम्मति और बल-प्रयोग के संयोजन से ही कायम है।

1.6.2 वैधता : राजनीति विज्ञान का केन्द्रीय विषय

इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए जी. राइट मिल्स कहते हैं, कि वैधता के विचार को राजनीति शास्त्र की प्रमुख संकल्पनाओं में सम्मिलित किया गया है। राजनीति के अध्ययन का संबंध प्रमुख उन विधियों से हैं जिनके द्वारा सत्ताधारी अपनी सत्ता को उचित ठहराते हैं और इनमें भी कि वह कहाँ तक इसमें सफल होते हैं। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के अध्ययन के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि लोग विद्यमान राजनीतिक व्यवस्था को कहाँ तक वैध मानते हैं और इस प्रकार राजनीतिक संरचना का आधार सम्मति पर कितना है, वनिस्पत बल प्रयोग के।

सत्ता के उन वास्तविक औचित्यों को सुनिश्चित करना भी महत्त्वपूर्ण है, जिनको कि प्रस्तुत किया जाता है; अर्थात, वे विधियाँ जिनके द्वारा राजनीतिक व्यवस्था को वैध बताया जाता है। जैसा कि विशिष्ट वर्गवाद सिद्धांतशास्त्री मॉस्का कहते हैं, यह किसी भी राजनीतिक व्यवस्था का 'राजनीतिक मंत्र' है। वैधता का प्रश्न तब और भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जब राजनीतिक व्यवस्थाओं के स्थायित्व और परिवर्तन की बात आती है। यह सच है कि राजनीतिक प्रणालियाँ उन परिस्थितियों में भी संचालित हो सकती हैं, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा भाग प्रणाली की वैधता को मानना छोड़ दे। हाल के वर्षों में दक्षिणी अफ्रीका का उदाहरण दिया जा सकता है; उसी तरह पोलैंड जहाँ यह प्रतीत होता था कि ज़ारूज़ेल्सिकि (Jaruzelski) काल की उल्लेखनीय लोकप्रिय तत्त्वों की आँखों में थोड़ी ही वैधता थी। बात यह है कि ऐसी परिस्थिति में शासन-काल को पूरी तरह से शक्ति पर भरोसा करना पड़ता है। तब यह अपने आप को अधिक अनिश्चित स्थिति में, आघात योग्य और आकस्मिक घटनाओं के प्रभावों की जकड़ में पाता है। यह प्रणाली कुछ समय के लिए रह सकती है, परंतु जब यह सहमति के बजाय बल पर अधिक आधारित होती है, तब क्रांतिकारी परिवर्त्तन के लिए एक शर्त अपने आप को उपस्थित करती है।

1.6.3 'अवैधता' की प्रक्रिया

उपरोक्त यह दर्शाता है कि क्यों किसी भी क्रांति से पहले एक ऐसा दौर आता है जब किसी प्रणाली के प्रमुख विचारों की निरंतर आलोचना होती है। इसे 'अवैधता' की प्रक्रिया कह सकते हैं, जिसके अंतगर्त विचार; जो शक्ति की विद्यमान संरचना को उचित ठहराते हैं, उनकी आलोचना की जाती है। फ्रांस के प्राचीन शासन-काल के पतन के बहुत पहले दैवी अधिकार (Divine Right) और कुलीनतंत्र की विचारधाराओं की दार्शनिकों और निष्पेक्ष राज्य के आलोचकों के द्वारा खिल्ली उड़ाई गयी तथा अस्वीकार किया गया था। अवैधता के ऐसे आन्दोलन ने पुरानी व्यवस्था के आधार को कमजोर किया था। इसने इसके क्रांतिकारी परिवर्तन का रास्ता प्रशस्त किया।

आधुनिक समय में एक उदाहरण वाइमार गणतंत्र (Weimar Republic) का है, जब जर्मन जनसंख्या के बड़े भाग ने प्रजातांत्रिक शासन काल में विश्वास खो दिया था और साम्यवादी विकल्प के भय से हिटलर की राष्ट्रीय-साम्यवादी पार्टी को अपना समर्थन दिया। परिणामस्वरूप बिना अधिक संघर्ष के गणतंत्र का पतन हुआ। समान कारणों का पूरे यूरोपीय मध्यदेश में समान प्रभाव हुआ। अनेक उदारवादी प्रजातंत्रों की पश्चिमी प्रणालियों को उखाड़ फेंका गया तथा उनकी जगह इटली, स्पेन, ऑस्ट्रिया और हंगरी में फासीवादी या अर्द्ध-फासीवादी सत्तात्मक प्रणालियों ने ले ली थी। सामान्य अर्थ में निष्कर्ष यह अवश्य होना चाहिए कि

कोई भी प्रणाली अपनी स्थिरता को खो देती है, जब प्रजा की आँखों में उसकी 'वैधता' खत्म हो जाती है।

अंततः, यह अवश्य मालूम होना चाहिए कि सामान्य समय में भी वैधता और अवैधता किसी भी राजनीतिक प्रणाली की स्थायी विशेषता हैं। वैधता की प्रक्रिया को विद्यमान व्यवस्था की वैधता के लिए उपलब्ध अनेक चैनलों के माध्यम से अधिक या कम सूक्ष्म रास्तों से संचालित किया जाता है। विधि सम्मत विचारों को शिक्षा की प्रारम्भिक अवस्थाओं से समाहित किया जाता है, सामाजिक अंतःक्रिया के विभिन्न रूपों के माध्यम से संकलित और विशेष रूप से प्रेस, दूरदर्शन और अन्य मीडिया के प्रभाव के माध्यम से प्रचार प्रसार किया जाता है। विचार, जिन्हें कि स्वीकार किया जाता है या जिन्हें प्रणाली की सीमाओं के अंतर्गत माना जाता है, लगभग सभी पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों पर दबाव डालते हैं। कार्य जो इन सीमाओं से परे होते हैं, उन्हें अवैध माना जाता है। अनाकर्षक बनने से कई राजनीतिक विकल्प बंद हो जाते हैं।

1.6.4 दक्षतापूर्ण सहमति

खतरनाक विचार उठे ही नहीं, इसके लिए कई प्रभावकारी विधियाँ उपलब्ध हैं। विचारों को स्रोत पर रोका जा सकता है, स्रोत चेतन और अवचेतन मस्तिष्क भी हो सकता है। शक्ति का एक प्रमुख आयाम लोगों की चेतना को प्रभावित करने तथा ढालने की क्षमता होता है, जिससे कि वे वैकल्पिक संभावनाओं के बारे में बिना कभी जाने राज्य के विद्यमान मामलों को स्वीकार करेंगे। तब सहमति दक्षतापूर्ण सहमति बन जाती है। एक खास सीमा तक हम सभी विद्यमान 'जनमत' से प्रभावित होते हैं। वहाँ से एक चढ़ाव पैमाना उस स्थिति तक पहुँचाता है, जहाँ मस्तिष्कों को ढ़ालना, क्रिया कौशल (Manipulation), राज्य का जाना बुझा उद्देश्य बन जाता है ताकि एक समान और लोकप्रिय मानसिकता पैदा हो। ऐसा नाज़ी जर्मनी में गोयबेल्स की प्रचार मशीन का उद्देश्य था और यह अभी भी किसी सर्वसत्तावादी शासन काल का उद्देश्य है।

क्रियाकौशल 'शक्ति शक्तिहीन के लिए अज्ञात' है जैसा कि सी. राईट मिल्स इसे मानते हैं। पीटर वॉर्सले बताते हैं कि 'यंत्र रचना जिसके द्वारा चेतना को कुशलता से नियंत्रित किया जाता है, आज के समाज में उसका महत्त्व बढ़ रहा है'। मार्क्सवादी भाषा में, ऐसी दक्षतापूर्ण सहमति अंततः 'गलत चेतना' को जन्म देगी। इसके विरुद्ध यह तर्क दिया गया कि जहाँ लोग, जैसा कि उदारवादी. प्रजातांत्रिक प्रणाली में चुनने और अभिव्यक्त करने में स्वतन्त्र होते हैं, चेतना को नियंत्रित करना संभव नहीं होता है। क्रिया कौशल केवल वहीं उपस्थित हो सकता है। जहाँ कि स्वतंत्र चयन का प्रावधान नहीं होता है जैसा कि एक-दलीय व्यवस्था में। यह भी तर्क दिया जाता है कि जहाँ कही भी लोग चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं, लेकिन वास्तव में विद्यमान व्यवस्था के विकल्प को नहीं चुनते हैं, उदाहरण के लिए क्रांतिकारी परिवर्त्तन के प्रति प्रतिबद्ध दलों का समर्थन करके – यह मानना सुरक्षित है कि समाज की विद्यमान संरचना विस्तृत रूप से जो लोग चाहते हैं, वही है। यह इस निष्कर्ष पर पहुँचाएगा कि राजनीतिक चुनाव और इस चुनाव को अभिव्यक्त करने के सामर्थ्य के महत्त्व को कम आँका नहीं जा सकता है। तथापि, 'लोग जो चाहते हैं' कुछ हद तक विभिन्न कारकों द्वारा निर्धारित किया जाता है। चयन शून्य में संभव नहीं होता है। संक्षेप में, चयन अपने आप वैधता की प्रक्रिया के प्रभाव से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं माना जा सकता है।

1.6.5 राज्य मशीनरी के कर्मचारी अभिजात्य वर्ग

संक्षिप्त सर्वेक्षण में हमने जिन राजनीतिक समस्याओं पर चर्चा की है, कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे उभरते हैं जोकि आगे की चर्चा में पुनः उभरेंगे। वे मुख्यतः इस वास्तविकता से निकलते हैं

कि राज्य शक्ति की संरचना की जाती है या उसे तोड़ा जाता है, विभिन्न और विशिष्ट भागों में ये हम पहले ही कह चुके है कि विभिन्न भागों के विशिष्ट संबंधों को राजनीतिक प्रणाली के द्वारा निर्धारित किया जाता है, जिसके अंतर्गत वे कार्य करते हैं। जैसे कि, एक साम्यवादी राज्य की आन्तरिक संरचना आगे का प्रश्न इन भागों के कर्मचारियों को शामिल करती हैं। राज्य पूरी तरह से मशीन नहीं है; यद्यपि 'राज्य की मशीनरी' मुहावरे का प्रयोग किया जा सकता है। राज्य लोगों द्वारा संचालित संस्थाओं का एक सेट है, जिसके कर्मचारियों के विचार और बुनियादी प्रवृत्तियाँ उनकी उत्पत्ति और सामाजिक पर्यावरण द्वारा काफी हद तक प्रभावित होते हैं। राज्य के सभ्रांत कौन हैं, यह राजनीति के अध्ययन में एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। जे.ए.सी. गाफिथ ने 'द पॉलिटिक्स ऑफ द ज्यूडीशियरी' नामक पुस्तक में 'राज्य के सभ्रांत' पद को हाल ही के एक वर्तमान अध्ययन के माध्यम से स्पष्ट किया है। यह दर्शाता है कि ब्रिटेन में सामान्यतः पाँच पूर्ण कालिक पेशेवर न्यायाधीशों में से चार अभिजात्य वर्ग से होते हैं। यह आश्चर्य का विषय नहीं है कि जब 'राजनीतिक मामलों के बारे में न्यायिक राय' पर चर्चा करते हुए, ग्रीमिथ 'इन मामलों में दृष्टिकोण की एक उल्लेखनीय निरंतरता पाते हैं जोकि राजनीतिक राय को एक सीमांत रेंज में केंद्रित होती है।

यहाँ यह समझना चाहिए कि विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से, इस प्रश्न के विभिन्न उत्तर दिए जायेंगे कि राज्य के सभ्रांन्त का स्वभाव और संगठन है। सभ्रांतवादी सिद्धांत इस कारक को सबसे अधिक महत्व देते हैं। उनके परिप्रेक्ष्य में, राजनीतिक प्रणाली के स्वभाव को इसके अभिजात्य वर्ग अल्पसंख्यक का शासन, के विश्लेषण के द्वारा सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है, जो राज्य के उपकरण पर नियंत्रण रखता है। इस परिप्रेक्ष्य में, लगभग प्रत्येक चीज़ नेताओं की प्रतिभा और योग्यताओं पर निर्भर करता है। नेतृत्व का निम्न स्तर भयंकर परिणामों को उत्पन्न करेगा। इस कारण से मैक्स वैबर जर्मनी राजनीतिक नेतृत्व के प्रकृति को लेकर अधिक चिंतित थे। वे सशक्त संसद के पक्षधर थे, क्योंकि वह इच्छित नेताओं के सृजन और जिम्मेदारी युक्त कार्य की क्षमता के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करेगा। वैकल्पिक रूप से नेतृत्व नौकरशाही के हाथ में चला जाएगा, जिसका प्रशिक्षण और जीवन शैली उन्हें सृजनात्मक नेतृत्व के लिए अनपयुक्त सामग्री बना देगा।

मार्क्सवादी सिद्धांत इस विषय के संबंध में दूसरी तरह से विचार करेंगे। वे राज्य के अभिजात्य वर्ग को कम महत्त्व प्रदान करेंगे। यह बहस होगी कि राज्य की गतिविधि के प्रयोजन और उद्देश्यों का अभिजात्य वर्ग के द्वारा कम निर्धारण किया जाता है, बल्कि जिस राज्य प्रणाली का अनुसरण करते हैं, उसके अंतर्गत सामाजिक परिप्रेक्ष्य और आर्थिक ढाँचे का अधिक प्रभाव होता है। इस चिंतन में राज्य मशीनरी के कर्मचारियों के आचरण की अपेक्षा इसकी संरचना का बहुत महत्त्व होता है। सामान्यतया 'संरचनात्मक' सिद्धांत सामाजिक संरचनाओं से निकलने वाली सरकार के सामने बाधाओं को उजागर करेंगे जिसके अंतर्गत सरकार को कार्य करना है। यद्यपि, दो प्रकार की व्याख्याएँ आवश्यक नहीं है कि एक दूसरे को काटे।

यह हमें अंतिम प्रश्न तक पहुँचाता है, जो राज्य और समाज के संबंध के विषय में है। मुहावरा, जिसका प्रयोग मार्क्स ने बोनापार्टिस्ट (Bonapartist) राज्य के लिए किया, इसकी शक्ति 'मध्य-वायु में बर्खास्त' नहीं है। सभी प्रकारों को राज्य प्रणालियों पर लागू किया जा सकता है। अनेक समस्यायें स्वतः उत्पन्न होती हैं। जैसे समाज की शक्ति संरचना कैसे राजनीतिक नेताओं को प्रभावित और बाधित करती हैं? किस सीमा तक राज्य व्यवस्था 'वैधता' को तथा प्रदान करने के लिए हस्तक्षेप करता है या वैकल्पिक रूप से, सामाजिक प्रणाली की असमानताओं को कम करता है? वास्तव में किस सीमा तक 'नागरिक समाज'

राज्य से स्वतंत्र होता है? कुछ सिद्धांतकारों के अनुसार, 'सर्वसत्तावाद' की अवधारणा का अर्थ उस परिस्थिति का ज़िक्र करना है, जहाँ समाज पूरी तरह से राज्य शक्ति से नियंत्रित किया जाता है और अतः समाज बिल्कुल स्वतंत्र नहीं होता है।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) राजनीति एक पेशे के रूप से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) वैधता क्या है? मैक्स वैबर के इसके संबंध में क्या विचार हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) अवैधता क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) सहमति को कैसे दक्षतापूर्ण बनाया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.7 सारांश

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजनीति की समझ का अर्थ मानव ज़िन्दगी की आवश्यकताओं, उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को समझना है। यह मानव के राजनीतिक गतिविधियों से संबंधित होती है। राजनीति शक्ति का खेल होता है। अनेक खिलाड़ी इस खेल को एक ही वक्त खेलते हैं और एक दूसरे से प्रतियोगिता करते हैं। राज्य इस पूरी गतिविधि का केन्द्रीय बिन्दु होता है। राष्ट्रीय गतिविधियों में यह राज्य के अधीन होता है और अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों में यह राज्यों के अधीन होता है। राज्य शक्ति के वैध प्रयोग के लिए अधिकृत होता है। प्राधिकार शासन करने का अधिकार होता है। प्राधिकार शक्ति की अपेक्षा वृद्ध सिद्धांत होता है। परिस्थिति की परख का अर्थ राजनीति की समझ होता है। यह परिस्थितिकीय घटना की उपज होती है।

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ऐलन आर.बॉल, *मॉडर्न पॉलिटिक्स एण्ड गवरमेंट*, मैकमिलन, लंदन 1988।

कार्ल जे. फ्रैडरिक, *ऐन इन्ट्रोडक्शन टू पॉलिटिक्ल थ्योरी*, हारपर एण्ड रो, न्यूयॉर्क, 1967।

डेविड हेल्ड. (55), *पॉलिटिकल थ्योरी टूडे*, पॉलिटी प्रेस, कैम्ब्रिज 1991।

लिनटन रॉबिन्स (संपा), *इंट्रोडयूसिंग पॉलिटिकल साईंस : थीक्स एण्ड कन्सैप्टस इन स्टडिंग पालिटिक्स*, लांगमैन, लंदन 1985।

नेविल जॉनसन, द *लिमिट्स ऑफ पॉलिटिकल साइंस*, क्लेरेनडॉन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 1989।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 1.2

2) देखें भाग 1.2 तथा विशेष रूप से उप-भाग 1.2.2

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 1.3

2) देखें उप-भाग 1.4.2

बोध प्रश्न 3

1) देखें भाग 1.5

2) देखें भाग 1.6 और उप-भाग 1.6.1 और 1.6.2

3) देखें उप-भाग 1.6.3

4) देखें उप-भाग 1.6.4